(6)

Page I

For UG student B.A (Part III) Psychology (H)
Paper Industrial Psychology
Group A, Paper 7th

Topic — औद्योगिक मनोविज्ञान की उत्पत्ती (Foundation of Industrial Psychology)

औद्योगिक मनोविज्ञान की उत्पती की शुरुआत फर्गुसन (Ferguson, 1962) के अनुसार 20 दिसम्बर 1901 माना जा सकता है जबकि Dr. वाल्टर डिल स्कॉट (Dr. Walter Dill Scott) ने विज्ञापन के क्षेत्र के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों की उपयोगिता को अपना महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया। इसके बाद करीब 12 शोध पत्र (research articles) इसी क्षेत्र में प्रकाशित हुए जिन्हें एक जगह मिलाकर स्कॉट (Scott) ने 1903 में एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जिसका नाम The Theory of Advertising रखा गया। इस पुस्तक में सबसे पहली बार व्यवसाय में मनोविज्ञान की उपयोगिता पे बल दिया गया। इसके बाद Scott ने 1908 तथा 1911 में व्यवसाय एवं विज्ञापन के कई अन्य क्षेत्रों में कार्य का महत्वपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन कि[या]

स्कॉट के इस महत्वपूर्ण योगदान एवं प्रकाशि[त] महत्वपूर्ण पुस्तकों के बावजूद कई कारणों से Scott को आधुनिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रथम औद्योगिक मनोविज्ञान होने की स्वीकृति नहीं दी गई। इन लोगों ने प्रथम औद्योगिक मनोविज्ञान होने का श्रेय ह्यूगो मुन्सटरबर्ग (Hugo Munsterberg)

M T W T F S S
Page No.
Date
YOUVA

को दिया है और उनके द्वारा लिखी गई पुस्तक दी साइकोलॉजी ऑफ इंडस्ट्रीयल इफिशियेन्सी (The Psychology of industrial Efficiency) को औद्योगिक मनोविज्ञान की प्रथम पुस्तक माना है जो 1913 में प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तक को अधिक मान्यता इसलिए दी गई है क्योंकि इस पुस्तक के माध्यम से मुन्स्टरबर्ग ने औद्योगिक मनोविज्ञान को मनोविज्ञान की एक प्रमुख शाखा के रूप में वैज्ञानिक ढंग से स्थापित किया गया तथा इसमें औद्योगिक मनोविज्ञान के प्रमुख कार्यक्षेत्रों जैसे कार्मिक का चयन, भौतिक ~~बाह्य~~ वातावरणों के प्रति समायोजन, थकान, नीरसता, खरीद-बिक्री आदि में मानवीय पक्षों को काफी रोचक ढंग से समझाया गया। इस प्रकार इस पुस्तक के प्रकाशन के बाद औद्योगिक मनोविज्ञान की उपयोगिता समस्त व्यवसाय एवं उद्योग के लिए वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित हो चुकी थी।

इसके तुरंत बाद प्रथम विश्वयुद्ध (First World War) प्रारंभ हो गया। जिसमें मनोवैज्ञानिकों ने विभिन्न तरह के सामूहिक परीक्षणों का निर्माण कर कई तरह के कार्मिकों के चयन में विशेष मदद की जिससे युद्ध कार्मिकों को विशेष मदद मिली। इन परीक्षणों का उपयोग उद्योग एवं व्यवसाय के लिए कार्मिकों के चयन एवं स्थापन में सफलतापूर्वक किये जाने लगा। जिससे औद्योगिक मनोविज्ञान के कार्यक्षेत्र एवं उपयोगिता में काफी वृद्धि हुई

Page 3

1917 में जरनल ऑफ अप्लाइड साइकोलॉजी (Journal of Applied Psychology) का प्रकाशन हुआ एवं व्यवसाय एवं उद्योग के विभिन्न पहलुओं से संबंधित वैज्ञानिक शोध पत्रिकायें छपने लगी। इससे औद्योगिक मनोविज्ञान का हौसला बुलंद हुआ एवं कालेजों एवं विश्वविद्यालय में भी औद्योगिक मनोविज्ञान तथा उससे संबंधित मनोविज्ञान जैसे कार्मिक मनोविज्ञान, व्यवसायिक मनोविज्ञान, तथा विज्ञापन मनोविज्ञान की औपचारिक शिक्षा प्रारंभ हो गई। 1919 में Scott तथा अन्य मनोवैज्ञानिकों ने मिलकर स्कॉट कंपनी ऑफ फिलाडेल्फिया की स्थापना की जो सबसे पहला मनोवैज्ञानिक परामर्शी संस्थान था। जिसके माध्यम से उद्योगों की कार्मिक समस्याओं के समाधान के लिए उचित परामर्श दिया जाने लगा। दो साल बाद साइकोलॉजिकल कॉरपोरेशन (Psychological Corporation) की स्थापना हुई जिसके माध्यम से भी ऐसी समस्याओं के लिए उचित परामर्श दिया जाने लगा। इसके परिणाम स्वरूप औद्योगिक मनोविज्ञान का स्थान प्रयुक्त मनोविज्ञान में काफी मजबूत हो गया। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद अमेरिका के प्रॉक्टर तथा गैम्बल कम्पनी, फिलाडेल्फिया कंपनी, हॉथोर्न प्लांट ने अपने अपने संस्थानों में कार्मिक शोध प्रोग्राम चलाए। हॉथोर्न प्लांट में 1927 से 1935-36 तक जो अध्ययन हुआ वह औद्योगिक मनोविज्ञान के विकास के लिए अति महत्वपूर्ण प्रमाणित हुआ।

हॉथोर्न अध्ययनों (Hawthorne studies) से प्राप्त नियमों एवं सिद्धान्तों को एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त माना जाता है। इस प्रकार 1930 के दशक तक औद्योगिक मनोविज्ञान प्रगति। मनोवैज्ञानिकों उद्योगों एवं व्यवसायों में स्थापित हो चुका था।

द्वितीय विश्वयुद्ध (Second world war) के प्रारंभ होने पर औद्योगिक मनोविज्ञान को और अधिक [illegible] पनपने के अच्छा अवसर प्राप्त हुआ। इस अवधि में औद्योगिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा तरह-तरह के कार्मिक परीक्षण तैयार किए गए तथा कार्य-विश्लेषण तथा निष्पादन का मूल्यांकन करने के लिए तरह-तरह की प्रविधियों का भी प्रतिपादन किया गया। जिनका उपयोग उद्योगों एवं व्यवसायों में काफी प्रचलित हो उठा। 1948 में पर्सोनल साइकोलॉजी (Personnel Psychology) नामक जर्नल का प्रकाशन हुआ। जिसमें मनोविज्ञान के सभी प्रयुक्त क्षेत्रों (applied areas) में किए गए शोधों को प्रकाशित किया गया।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अमेरिका एवं ब्रिटेन में दो ऐसे संगठनों का प्रादुर्भाव हुआ जिसने औद्योगिक मनोविज्ञान को पनपने और बढ़ावा दिया। ये दो संगठन थे

(1) मानव कारक समाज (Human Factors Society)
(2) एर्गोनॉमिक्स समाज (Ergonomics Society)

मानव कारक समाज उन औद्योगिक मनोवैज्ञानिकों की है जिनकी अभिरुचि मानव-इन्जिनियरिंग समस्या

के अध्ययन में लगी थी। एर्गोनोमिक्स (सामान्य विद्वान का अंतर्राष्ट्रीय मानव कारक समाज का एक त्रैमासिक संगठन) विशेषकर प्रकाशित होने वाली जर्नल को एर्गोनामिक्स कहा जाता है। ब्रिटेन में एक दूसरा जर्नल ऑक्यूपेशनल मनोविज्ञान (Occupational Psychology) भी प्रकाशित होना प्रारंभ हो गया। 1966 में अमेरिका से एक नया जर्नल (ऑरगनाइजेशनल बिहेवियर एंड ह्यूमन परफॉरमेन्स Organisational Behaviour and Human Performance) भी प्रकाशित होना शुरू हुआ। जिससे औद्योगिक मनोविज्ञान की पकड़ काफी मजबूत होने लगा।

1960 से औद्योगिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में संगठनात्मक मनोविज्ञान (Organisational Psychology) का प्रवेश प्रारंभ हो गया। आधुनिक समय में, संगठनात्मक मनोविज्ञान में मुख्यतः किसी संगठन या संस्थान में कार्यरत कर्मचारियों के संगठनात्मक व्यवहार जो मूलतः कार्य, उत्पादन तथा कर्मचारियों से संबंधित होते हैं, का अध्ययन किया जाता है।

औद्योगिक मनोविज्ञान में टेलर (Taylor) तथा गिलब्रेथ (Gilbreth) के योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। टेलर का योगदान वैज्ञानिक प्रबंध (Scientific management) तथा गिलब्रेथ (Gilbreth) का योगदान समय तथा गति अध्ययन में

महत्वपूर्ण रहा। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद जर्मनी के उद्योग एवं व्यवसायों में मनोविज्ञान का प्रयोग अधिक होने लगा तथा कार्मिक चयन शाखाएँ खोली गई। 1960 के बाद से सोवियत संघ में औद्योगिक मनोविज्ञान की प्रगति तेजी से होना प्रारंभ हो गया तथा औद्योगिक मनोविज्ञान की औपचारिक शिक्षा विश्वविद्यालयों में प्रारंभ हो गई।

भारत में औद्योगिक मनोविज्ञान स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से कुछ मनोवैज्ञानिकों जैसे - [illegible] प्रो० [illegible] दुर्गानन्द सिन्हा, प्रो० जायवल्लभ मुखर्जी सिंह, प्रो० एच सी गांगुली, कैलाश त्रिपाठी, प्रो० जनक पांडे के प्रयासों से रचनात्मक अवस्था में आ सका। 1950 के बाद भारत में कई केन्द्र तथा संस्थान खोले गए। जैसे, Institute of Management Ahmadabad, [illegible] Ahmadabad Textile Industries Research Association, Shree Ram Centre for Industrial Relation, A.N. Sinha Institute of Social Studies, Patna.

इस प्रकार हम देखते हैं कि - औद्योगिक मनोविज्ञान का उत्पत्ति विगत शताब्दी के आरंभ में हुआ और अंतिम दशक में औद्योगिक मनोविज्ञान का संगठनात्मक मनोविज्ञान के साथ एक अनोखा मेल होता दिखाई पड़ता किन्तु औद्योगिक मनोविज्ञान का भविष्य सुनहला है। इसकी सफलता एवं कार्यक्षेत्र में वृद्धि निश्चित दिखता है।

By
Kumar Patel
Assistant professor, Department of Psychology, Maharaja College, Ara.
Phone - 8521986965

Date 9/5/2020